शोध-चिंतन पत्रिका: विद्वानों द्वारा पुनरीक्षित ई शोध पत्रिका
वर्ष: 3, अंक:4; जनवरी-जून, 2022
पृष्ठ संख्या : 01-09

महिला उपन्यासकारों की रचनाओं में उत्तर औपनिवेशिक भारतीय नारी

✍ डॉ. अनूषा निल्मिणी सल्वतुर

शोध-सार :

साहित्य मानव जीवन के गत्यात्मक सौन्दर्य की भावात्मक अभिव्यक्ति है। अतः यह निर्विवाद है कि साहित्य और मानव जीवन का परस्पर संबंध अत्यंत घनिष्ठ है। मानव जीवन की विविध आयामीय यात्राओं में अनेक प्रकार के जीवन मूल्यों का निर्माता भी मानव है। जहाँ साहित्य, समाज का दर्पण है, वहाँ वह मानव निर्मित जीवन-मूल्यों का संवाहक भी है। इसमें संदेह नहीं कि साहित्य का केन्द्रबिंदु मानव है और मानव जीवन के यथार्थ चित्रण को प्रस्तुत करने वाला औपन्यासिक साहित्य ही प्रस्तुत अध्ययन का विषय है। यह विशेषतः उत्तर औपनिवेशिक प्रमुख महिला उपन्यासकारों के उपन्यासों में चित्रित भारतीय नारी पर केन्द्रित है। प्रस्तुत अध्ययन के लिए स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यास साहित्य में नारी के अधिकारों के प्रति जागृति और नारी चेतना तथा संघर्षों को सजीव ढंग से चित्रित करनेवाली महिला उपन्यासकारों में से उषा प्रियंवदा, मन्नू भंडारी, कृष्णा सोबती, मृदुला गर्ग, मृणाल पांडे तथा मैत्रेयी पुष्पा को चुन लिया गया है और उनके बहुचर्चित उपन्यासों में चित्रित नारी-पात्रों के जीवन ही अध्ययन के केंद्रीय विषय हैं।

बीज शब्द : *उपन्यास, स्वातंत्र्योत्तर हिंदी साहित्य, महिला उपन्यासकार, भारतीय नारी*

प्रस्तावना :

सदियों से ही भारतीय समाज में नारी की अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका रही है। भारतीय नारी के ऐतिहासिक तत्त्वों के अनुसार प्राचीन काल में पुरुषों के साथ बराबरी की स्थिति से लेकर मध्ययुगीन परिवेश में निम्न स्तरीय जीवन और आधुनिक काल में कई सुधारकों द्वारा समान अधिकारों को बढ़ावा दिये जाने तक, भारत में महिलाओं का इतिहास काफी गतिशील रहा है।

भारत के प्राचीन ग्रंथों में नारी को पूज्य, देवतुल्य माना गया है। भारतीय धारणा है कि देव शक्तियाँ वहीं पर विश्वास रखती हैं जहाँ पर समस्त नारी जाति को प्रतिष्ठा व सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है। उनकी और भी धारणा है कि नारी शक्ति के बिना इस संसार में मनुष्य कुछ भी नहीं कर सकता, अर्थात् नारी शक्ति को इस सृष्टि का मूल कहा जाता है। ऐसी मान्यता भी है कि जिस घर में नारी का आदर-सम्मान नहीं होता, वहाँ पर लक्ष्मी का निवास नहीं होता। भारत में पति-पत्नी को लेकर भी यह मत रहा है कि दोनों के शारीरिक, मानसिक, नैतिक आदि सभी आदर्श अभिन्न हैं और दम्पतियों का अभिन्न तथा प्रेमपूर्ण जीवन ही धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष की प्राप्ति का आधार माना गया है। वस्तुतः यह कह सकते हैं कि मानव जीवन का प्रत्येक क्षेत्र नारी के बिना अपूर्ण है।

अतः यह कोई विवादास्पद बात नहीं कि मनुष्य के जीवन में पुरुष की तरह नारी का भी अपना महत्व है;क्योंकि समाज के निर्माण में वह भी अपनी सहभागिता प्रदान करती चली आ रही है। अपनी विविध भूमिकाओं का निर्वाह करते हुए 'नारी', समाज का अभिन्न हिस्सा बन जाती है। नारी माता है, पत्नी है, दासी है। उसमें करुणा और ममता हैं। वह जननी है, प्रकृति है। पत्नी के रूप में पति की सहायिका, बहन के रूप में भाई की रक्षिका, सास के रूप में दया और माँ के रूप में ममता की मूर्ति है। यही भारतीय नारी का स्वरूप है।

विश्लेषण:

आधुनिक हिंदी साहित्य के मूर्धन्य रचनाकार जैनेन्द्र कुमार ने 'परख' नामक अपने उपन्यास में नारी की जो परिभाषा दी है वह अत्यंत सही मालूम पड़ती है। वास्तव में उसे नारी पर दी गयी परिभाषा को विश्व-व्यापी परिभाषा कहें, तो उसमें कोई अत्युक्ति नहीं होगी। जैनेंद्र कुमार द्वारा की गई परिभाषा कुछ इस प्रकार है-

> स्त्री ही व्यक्ति को बनाती है, घर को, कुटुम्ब को बनाती, जाति और देश को भी, मैं कहता हूँ, स्त्री ही बनाती है। फिर उन्हें बिगाड़ती भी वही है। आनन्द भी वही, कलह

> भी, ठहराव भी और बहाव भी, दूध भी और खून भी, रोटी भी और स्कीमें और फिर अपनी मरम्मत और श्रेष्ठता भी, सबकुछ स्त्री ही बनाती है। धर्म स्त्री पर टिका है, सभ्यता स्त्री पर निर्भर है और फैशन की जड़ भी वही है। बात क्यों बढ़ाओ, एक शब्द में कहो, दुनिया स्त्री पर टिकी है। (कुमार 2015: 44)

दूसरी ओर हम यह कह सकते हैं कि दुनिया भर के विचारकों की राय में बहुधार्मिकता, बहुजातीयता, बहुभाषिकता तथा बहुसंस्कृति से युक्त भारतीय समाज में 'नारी' एक स्वतंत्र इकाई तथा स्वतंत्र अस्तित्ववाली के रूप में प्रतिष्ठित है।

यह सर्वविदित है कि प्रायः सभी साहित्यकारों ने नारी को अपने साहित्य की अभिव्यक्ति का साधन बनाया तथा परिवेश एवं संवेदना के अनुरूप उसके विविध रूपों का चित्रण भी किया है। फलतः साहित्य के माध्यम से नारी के स्वत्व की पहचान को अभिव्यक्ति मिली। साथ-साथ जहाँ नारी को, साहित्य की अभिव्यक्ति का साधन बनाया गया, वहाँ वह स्वयं भी साहित्य-रचना की ओर अग्रसर हुई। परिणामतः उत्तर औपनिवेशिक या स्वातंत्र्योत्तर युग में बदलते परिवेश के अनुरूप ही लेखिकाओं के लेखकीय संसार का आरंभ हुआ।

विचारकों के कथनानुसार हिंदी कथा साहित्य के प्रेमचंद युग के आरंभ तक स्त्रियों पर हुए नैतिक बंधनों के प्रभाव के कारण उनका साहित्य परिमाण एवं कथा-शिल्प दोनों दृष्टियों से त्रृटिपूर्ण था। लेकिन स्वतंत्रता के बाद सामाजिक रूढ़ियों का विरोध, नारी त्रासदी की गहन अनुभूति, प्रेम, परिवार, दाम्पत्य आदि जीवन के विभिन्न पहलुओं में नारी के साथ हो रहे अन्याय, महिलाओं पर होनेवाले शारीरिक और मानसिक अत्याचारों की यथार्थता आदि को लेकर महिला कथाकारों ने जिन उपन्यासों का प्रणयन किया है, उन्हें हिंदी साहित्य जगत में जीवन्त दस्तावेज़ के रूप में ही मान्यता प्राप्त है। विशेषतः विचारकों में यही मान्यता है कि आधुनिक काल में हिंदी उपन्यास क्षेत्र में न केवल महिला उपन्यासकारों की संख्या में वृद्धि हुई, अपितु उनके साहित्य में नारी जीवन को ही पूरी क्षमता और

वास्तविकता के साथ चित्रित किया जाने भी लगा है। स्त्री-लेखन पर राजेंद्र भट्ट द्वारा संपादित 'आजकल' पत्रिका में प्रकाशित "नारी चेतना के विविध पक्ष और कथा साहित्य: चंद्रकांता" शीर्षक आलेख की गई निम्नोक्त टिप्पणी विचारणीय है-

> ...विपुल मात्रा में रचा जा रहा स्त्री-लेखन इस बात का प्रमाण है कि आज की नारी बदल रहे समय, समाज और अनेक विद्रूपों, चुनौतियों के प्रति सजग-सचेत है। जहाँ देह-मुक्ति की आवाज़ उठी है, वही स्त्री-पुरुष संबंधों में मैत्री और सौहार्द के लिए संघर्ष भी है। स्त्री-शोषण, बलात्कार की समस्या, आतंकवाद से उपजे विस्थापन, ग्रामीण स्त्रियों की समस्याओं और स्वचेतना, रूढ़ियों-बेड़ियों और व्यवस्था की अड़चनों से भिड़ती आज की चेतना सम्पन्न लेखिकाएँ 'स्व' से 'पर' की यात्राएँ कर रही हैं। घरेलू से लेकर वैवाहिक समस्याओं के प्रति सचेत लेखिकाएँ अपनी समृद्ध सोच से साहित्य में अपनी भागीदारी निभा रही हैं। अपने भीतर झाँककर आत्म मंथन भी करती है कि इस मूल्य खिन्न समय में वह कौन-सी स्त्री बनना चाहती है? उसके सामने नयी चुनौतियाँ तो हैं ही।...(भट्ट 2014:23)

इन्हीं चुनौतियों का सामना करते हुए विशेष रूप से स्वातंत्र्योत्तर कथा लेखिकाओं ने अपनी औपन्यासिक कृतियों में सामाजिक दायित्वों का निर्वाह किया है। उन्होंने एक ओर जहाँ सामाजिक मूल्यों की प्रतिष्ठा विशुद्ध रूप से मानवीय धरातल पर की है, वही दूसरी ओर पूर्वयुगीन जर्जर, रूढ़िग्रस्त मूल्यों का खुले रूप में बहिष्कार भी किया है।

महिला उपन्यासकारों के उपन्यास प्रायः नारी जीवन, स्त्री-पुरुष संबंधों, आधुनिक नारी की समस्याओं से जुड़े हुए हैं। इनका लेखन नारी जगत को बेहतर बनाने का प्रशंसनीय प्रयास है। भारतीय समाज की स्थिति एवं परिवेश में एक नारी की स्थिति व उसके संघर्षमय जीवन की दयनीय स्थिति का चित्रण कर उन्होंने नवीन मूल्यों की स्थापना की है।

यह सर्वविदित है कि स्वतंत्रता-प्राप्ति के पश्चात् भारतीय समाज में स्त्री की स्थिति में व्यापक परिवर्तन आया। वस्तुतः यह नारी-नव जागरण का दूसरा चरण कहलाता है। फलतः भारतीय नारी आर्थिक, सामाजिक और नैतिक पक्षपातों से मुक्त हुई और अपने अधिकारों के प्रति सजग होकर संघर्ष करने लगी। विचारकों के कथनानुसार बीसवीं शताब्दी के अंत में यह संघर्ष तेज़ हो गया तथा प्रबुद्ध महिला लेखिकाओं ने नारी पीड़ा और नारी अस्मिता को अपनी रचनाओं में गंभीरता से चित्रित किया। आज के भौतिकवादी युग की दौड़ में सर्वाधिक संघर्षशील जीव नारी ने हिंदी कथा साहित्य के प्रति किस प्रकार का योगदान दिया है, वह उर्मिला गुप्ता के निम्न कथन से स्पष्ट परिलक्षित होता है-

> ...वस्तुतः लेखिकाओं ने हिंदी कथा साहित्य को अपनी संवेदनशील भावनाओं एवं जागरूक प्रतिभा का आश्रय देकर पर्याप्त गौरव किया है। नारी हृदय का जितना सफल चित्रण लेखिकाएँ कर सकी हैं, उतना लेखकों के कथा साहित्य में उपलब्ध नहीं है।...(गुप्ता 1978:363)

इस बात में कोई अत्युक्ति नहीं कि प्रस्तुत कथा लेखिकाओं (उषा प्रियंवदा, मन्नू भंडारी, कृष्णा सोबती, मृदुला गर्ग, मृणाल पांडे तथा मैत्रेयी पुष्पा) ने दाम्पत्य जीवन की सभी दिशाओं का भ्रमण किया है और उसके विविध रूपों का चित्रांकन किया है। महिला होने के नाते स्त्री-वर्ग की कठिनाइयों को इन लेखिकाओं ने सहज स्वाभाविक रूप से पकड़ा है और निःसंकोच उसकी अभिव्यक्ति की है। सुखी दाम्पत्य जीवन की आभा से भी वे प्रभावित हैं, दूसरी ओर विभिन्न कारणों से नीरस बनते दाम्पत्य जीवन का चित्रण किया जाना भी इन्होंने अपना कर्तव्य समझा है। आलोच्य छः लेखिकाओं में से केवल कृष्णा सोबती के 'मित्रो मरजानी' उपन्यास में 'धनवन्ती और गुरुदास' के सुखी दाम्पत्य जीवन की झलक देखने को मिलती है; क्योंकि वे एक संयुक्त परिवार के आदर्श पति-पत्नी हैं।

लेकिन, मन्नू भंडारी के 'आपका बंटी' में शकुन और उसके पति, कृष्णा सोबती के 'मित्रो मरजानी' में मित्रो और उसके पति, मृदुला गर्ग के 'चित्तकोबरा' में मनु और उसके पति, मृणाल पांडे के

'रास्तों पर भटकते हुए' में मंजरी और उसके पति, मैत्रेयी पुष्पा के 'झूला नट' में शीलो और उसके पति- ये सब आधुनिक युग के पात्र हैं, जिन्होंने कभी सुखद दाम्पत्य जीवन का अनुभव नहीं किया।

आधुनिक युग में प्राचीन मूल्य तथा परम्पराओं का टूटना, परिवार में कुंठा, तलाक, टूटन एवं बिखराव बढ़ते जाना आदि का प्रभाव सहित्य पर बहुत गंभीर रूप से पड़ गया। फलतः उत्तर औपनिवेशिक लेखिकाओं ने भी इन बिखरती, टूटती स्थितियों के चित्र अवश्य खींचे हैं। अतः विवाह के संदर्भ में बदलते दृष्टिकोणों का चित्रण लेखिकाओं की रचनाओं में है। उन उपन्यासों में कुछ पात्र ऐसे हैं, जो वैवाहिक जीवन से संतुष्ट नहीं हैं और वे विवाह की प्रथा को ही समाप्त कर देना चाहते हैं। उषा प्रियंबदा के 'पचपन खंभे लाल दीवारें' की सुषमा, 'आपका बंटी' की शकुन, 'मित्रो मरजानी' की मित्रो, 'चित्तकोबरा' की मनु, 'रास्तों पर भटकते हुए' की मंजरी, 'झूला नट' की शीलो- आदि उसके लिए जीवंत उदाहरण हैं। इनमें से कई, प्रथम विवाह से ऊबकर जब दूसरे विवाह कर लेती हैं, तब उससे भी संतुष्टि नहीं पातीं।

स्पष्ट है कि सदियों से परम्परा और रूढ़ियों की जंजीरों से जकड़ी महिलाओं की कलम, यौन-संबंधों, काम-चेष्टाओं, और रतिविषयक नारी-दृष्टि को अंकित करने में कार्यरत रही है। 'सेक्स' के बिना नारी की अपनी कोई वैयक्तिक पहचान नहीं है। इसे स्वर देने की चेष्टा कथा-लेखिकाओं ने की है।

लेखिकाओं ने विवाह-पूर्व तथा विवाहोपरांत काम-संबंधों का खुलकर चित्रण किया है और विशेष परिस्थितियों में उचित भी ठहराया है। विवाहोत्तर यौन-संबंधों के लिए 'चित्तकोबरा' के मनु और रिचर्ड का संबंध अधिक उपयुक्त उदाहरण प्रतीत होता है। लेखिका मृदुला गर्ग ने उन अवस्थाओं का बड़ा मार्मिक चित्रण किया है। इस उपन्यास में लेखिका ने निःसंकोच मनु और उसके पति के साथ हुए काम-संबंध का खुलकर चित्रण किया है। वहाँ पर लेखिका यह बताना चाहती हैं कि प्रेम के बिना शारीरिक संबंध केवल भोग-लिप्सा मात्र है, आत्मा का उत्पीड़न है; क्योंकि उन दोनों के काम-संबंध के चित्रण से एकदम पृथक रूप मनु और अपने प्रेमी रिचर्ड के काम-संबंधी चित्रण में देखने को मिलता है।

उसी के माध्यम से लेखिका यह भाव पाठकों के समक्ष रखना चाहती हैं कि सुखी वैवाहिक जीवन के लिए यौन भावनाओं की तृप्ति या संतुष्टि अनिवार्य है।

स्वातंत्र्योत्तर महिला लेखन में विषय चाहे दाम्पत्य जीवन रहा हो, प्रेम संबंध रहा हो या यौन-संबंध, प्रत्येक क्षेत्र में नारी की मुक्ति की आकांक्षा उभरकर सामने आयी है।

'आपका बंटी' की शकुन अपने विवाहोत्तर प्रेम संबंध के कारण अपने इकलौते बच्चे के जीवन से भी मुक्ति पाना चाहती है। वह अच्छी तरह जानती है कि ऐसा आचरण माता के लिए लायक नहीं है, लेकिन अपने प्रेम की मुक्ति हेतु बेटे को छोड़ देती है। अर्थात् आधुनिक नारी परम्परागत मान्यताओं को उसी स्थिति बनाये रखने के लिए अपने अस्तित्व का बलिदान देने को तैयार नहीं है। परिवार, पति,बच्चे वालों द्वारा बने बनाये ढाँचे से वह बाहर निकलने लगी है। शकुन इसके लिए एक जीवंत उदाहरण है।

'झूला नट' की शीलो पति-परित्यक्ता होते हुए भी जीवन से पराजित नहीं होती। अपनी शारीरिक भूख को मिटाने के लिए या मुक्ति के लिए अपने देवर को शिकार बना लेती है। अंत में अपने पति, सास और देवर को अपने वश कर लेती है। वास्तव में आलोच्य उपन्यासों में चित्रित नारी पात्रों में से शीलो ही एक ऐसी पात्र है जिसने नारी-मुक्ति के लिए बड़ी शक्तिशाली रूप दर्शाये हैं।

इन कथा लेखिकाओं ने मध्यवर्गीय भारतीय स्त्रियों के जीवन को पूर्णतः पकड़ने का प्रयत्न किया है। मध्यवर्ग के परिवार की नींव एक ओर उसकी आर्थिक स्थिति पर निर्भर है, दूसरी ओर उस परिवार की केन्द्रबिंदु स्त्री ही है। 'मित्रो मरजानी' की मित्रो तथा 'झूला नट' की शीलो के अतिरिक्त अन्य सभी नारी पात्र शिक्षित, कामकाजी मध्यवर्ग की स्त्रियाँ हैं। फिर भी इन पढ़ी-लिखी नारियों की अपेक्षा शीलो और मित्रो अपने जीवन के अधिकारों के प्रति अधिक सजग हैं। अन्य जो पात्र हैं, वे अपने अधिकरों को लेकर लड़ती अवश्य हैं, फिर भी मध्यवर्गीय परिवेश में अपने आपको किसी-न-किसी तरह सँभालती हई भी दिखाई देती हैं।

निष्कर्ष :

निष्कर्षतः यह कह सकते हैं कि नागरिक तथा ग्राम्य जीवन में उलझी हुई महिलाओं की आंतरिक तथा बाह्य मनःस्थितियों का यथार्थ पर्दाफाश करना आलोच्य लेखिकाओं का लक्ष्य रहा है। हिंदी उपन्यास साहित्य की इन आलोच्य लेखिकाओं ने आधुनिक नारी के आत्म-संघर्ष की कहानियाँ रचने में सफलता प्राप्त की है। भारतीय पारिवारिक और सामाजिक जीवन में घटित क्रांतिकारी परिवर्तनों से प्रभावित आधुनिक नारी अपनी नयी मानसिकता का प्रदर्शन करने लगी है। इसलिए आज की नारी अपनी स्थिति के प्रति सजग है। लेकिन व्यावहारिक जीवन में नारी आज भी पुरुष से भिन्न मानी जाती है। वहाँ भी वह शोषण की जंजीरों से बंधी है।

आज नारी-जागरण का युग है। अर्थात शताब्दियों से चले आने वाले शोषण के विरुद्ध लड़ने का साहस नारी को मिला है। नारी-मुक्ति आन्दोलन के प्रभाव से स्वयं अपने को दमन और शोषण से मुक्त करने की शक्ति उनमें पैदा हुई है। आज सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और शैक्षिक क्षेत्रों में नारी को भी समान स्थान तथा अधिकार प्राप्त हो रहा है।

सदियों से पद-दलित नारी आज अपने पैरों पर खड़ी होने लगी है। घर-गृहस्थी सँभालने के अतिरक्त उसका कार्य-क्षेत्र घर की चारदीवारी को लाँघकर विस्तृत फलक को ग्रहण करने लगा है। आधुनिक नारी ने जीवन को बड़ी गहनता से आत्मसात किया है और महिला उपन्यासकारों ने भी बड़ी कलात्मकता एवं सुन्दरता के साथ नारी मुक्ति को चित्रित किया है।

आधुनिक महिला उपन्यासकारों में से आलोच्य लेखिकाएँ, अपनी रचनाओं के कारण महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं। इन लेखिकाओं के उपन्यासों का उद्देश्य नारी जीवन की समस्याओं का उद्घाटन करना है। उन्होंने नारी हृदय के मनोभावों, उनकी प्रतिक्रियाओं तथा उनकी सूक्ष्म अंतर्दृष्टि का चित्रांकन एक कुशल चित्रकार की भाँति किया है।

ग्रंथ-सूची:

अग्रवाल, साधना. वर्तमान हिंदी महिला कथा-लेखन और दाम्पत्य जीवन. नयी दिल्ली: वाणी प्रकाशन, 1995.

अमरनाथ.नारी मुक्ति का संघर्ष. नोएडा:रेमाधन प्रकाशन, 2007.

कुमार, जैनेंद्र.परख.पंचम.नई दिल्ली:भारतीय ज्ञानपीठ, 2015.

खेतान, प्रभा.उपनिवेश में स्त्री. दिल्ली:वाणी प्रकाशन, 2006.

गुप्ता, उर्मिला. स्वातंत्रयोत्तर कथा लेखिकाएँ. नई दिल्ली: अनुराग प्रकाशन, 1978.

गर्ग, मृदुला.चित्तकोबरा.नई दिल्ली:नेशनल पेपरबैक्स, 2009.

पांडे, मृणाल.रास्तों पर भटकते हुए.नयी दिल्ली:राधा कृष्ण प्रकाशन, 2010.

प्रियंबदा,उषा. पचपन खंभे लाल दीवारें.प्रथम.दिल्ली: राजकमल प्रकाशन,2009.

पुष्पा, मैत्रेयी.झूला नट. नयी दिल्ली:राजकमल प्रकाशन प्रा. लि., 2001.

भट्ट, राजेंद्र, संपा. आजकल: नारी चेतना के विविध पक्ष और कथा साहित्य: चंद्रकांता, मार्च 2014.

भंडारी, मन्नू.सम्पूर्ण उपन्यास.नयी दिल्ली:राधाकृष्ण प्रकाशन, 2009.

सोबती, कृष्णा.मित्रो मरजानी.नई दिल्ली:राजकमल प्रकाशन प्रा. लि., 2007.

संपर्क-सूत्र :
वरिष्ठ प्रवक्ता, हिन्दी विभाग
केलानिया विश्वविद्यालय, श्रीलंका
ई-मेइल: sanushanilmini@yahoo.com